व्याकरण दर्पण 7

1. भाषा, लिपि और व्याकरण

1 (क) भाषा के जिस रूप में व्यक्ति लिखकर अपने मन के भाव प्रकट करता है और दूसरे पढ़कर उसकी बात समझते हैं, उसे लिखित भाषा कहते हैं।

(ख) भाषा का क्षेत्र बोली की अपेक्षा बहुत अधिक विस्तृत होता है। इसके साथ-साथ बोली में केवल लौकिक साहित्य मिलता है जबकि भाषा का समृद्ध साहित्य होता है।

(ग) भाषा का लिखित रूप मौखिक की अपेक्षा अधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि इसे अधिक समय तक सुरक्षित रखा जा सकता है तथा इसकी प्रामाणिकता भी अधिक होती है।

(घ) ध्वनि, भाषा और उसके रूपों तथा लिपि आदि सभी के प्रयोग के नियमों का शास्त्र व्याकरण कहलाता है। भाषाओं के सही और समुचित उपयोग के लिए व्याकरण का ज्ञान अत्यंत आवश्यक है। इसलिए इसकी बहुत अधिक उपयोगिता है।

(ङ) देश के प्रशासन एवं कामकाज की भाषा राजभाषा कहलाती है तथा देश की सर्वाधिक जनसंख्या द्वारा बोलचाल एवं अपने साधारण कार्यों में प्रयोग में लाई जाने वाली भाषा राष्ट्रभाषा कहलाती है।

2 (क) राजभाषा (ख) चार (ग) देवनागरी (घ) पाँच

3 (क) ✓ (ख) ✗ (ग) ✗ (घ) ✓ (ङ) ✗ (च) ✓

बहुविकल्पी प्रश्न

1 (ख) **2** (क) **3** (क) **4** (घ)

रचनात्मक गतिविधि

राज्य	भाषा	राज्य	भाषा
केरल	मलयालम	उत्तर प्रदेश	हिंदी
महाराष्ट्र	मराठी	नागालैंड	संथली
असम	असमिया, बोडो	गोवा	कोंकणी
गुजरात	सिंधी, गुजराती	उत्तराखंड	नेपाली, संस्कृत, हिंदी
मणिपुर	मणिपुरी	कर्नाटक	कन्नड़
बिहार	मैथिली		

पश्चिम बंगाल	बाँग्ला
कश्मीर	उर्दू, कश्मीरी, डोगरी
पंजाब	पंजाबी
तमिलनाडु	तमिल
मध्य प्रदेश	हिंदी
हिमाचल प्रदेश	हिंदी
आंध्र प्रदेश	तेलुगु
झारखंड, छत्तीसगढ़	हिंदी
तेलंगाना	तेलुगु
उड़ीसा	उड़िया

म	ल	या	ल	म	रा	ठी	अ
गु	ज	रा	ती	णि	सिं	धी	स
उ	र्दू	बो	ज्ञ	पु	मै	ने	मि
ड़ि	हिं	डो	ग	री	थि	पा	या
या	दी	छ	सं	थ	ली	ली	कों
पं	जा	बी	स्कृ	क	श्मी	री	क
ते	लु	गु	त	न्न	स	श	णी
बाँ	ग्ला	ज	ह	ड़	त	मि	ल

2. वर्ण विचार

1 (क) जिन वर्णों का उच्चारण करते समय मुख में हवा बिना किसी रुकावट के निकलती है उन्हें स्वर कहते हैं। स्वर अपने आप में स्वतंत्र होते हैं। इनकी मात्राएँ होती हैं जबकि व्यंजनों की मात्राएँ नहीं होती तथा वे अपने शुद्ध उच्चारण के लिए स्वरों पर निर्भर रहते हैं।

(ख) संयुक्त व्यंजन दो भिन्न व्यंजनों के योग से बनते हैं, इसलिए इन्हें संयुक्त व्यंजन कहते हैं।

(ग) अं या अनुस्वार (ं) जिस वर्ण के ऊपर लगा हो उसके तुरंत बाद बोला जाता है। इसे नाक से बोला जाता है। अनुनासिक की मात्रा वर्ण के ऊपर चंद्रबिंदु (ँ) के रूप में लगती है। इस ध्वनि को बोलते समय हवा मुँह और नाक दोनों से निकलती है।

(घ) उत्क्षिप्त ध्वनियों (ड़, ढ़) की विशेषता है कि इनसे कोई शब्द शुरू नहीं होता। ये केवल शब्दों के बीच में या अंत में ही आती हैं; जैसे – सड़क, पढ़ाई, सीढ़ी आदि।

2. अनुनासिक – काँच पाँच पूँछ चँद्र आँत हँस माँ मुँह

अनुस्वार – कंचन रंग बिंदु कंधा हंस व्यंजन डंडा ठंड

3 (क) स्पर्श (ख) उत्क्षिप्त (ग) अयोगवाह (घ) समान (ङ) स्वररहित

4 दीर्घ स्वर – आ, ए, ऊ — स्पर्श व्यंजन – ज, प, ड

अंतस्थ व्यंजन – व — ऊष्म व्यंजन – ह

उत्क्षिप्त व्यंजन – ढ़ — व्यंजन द्वित्व – प्प, ब्ब

संयुक्त व्यंजन – ज्ञ, श्र — ह्रस्व स्वर – ऋ

5 चाँद – च् + आँ + द् + अ

खिलौना – ख् + इ + ल् + औ + न् + आ

विज्ञान – व् + इ + ज् + ञ् + आ + न् + अ

कृषक – क् + ऋ + ष् + अ + क् + अ

प्रार्थना – प् + र् + आ + र् + थ् + अ + न् + आ

मोक्ष – म् + ओ + क् + ष् + अ

ध्रुव – ध् + र् + उ + व् + अ

बहुविकल्पी प्रश्न

1 (घ) **2** सभी सही हैं। **3** (क) **4** (क)

रचनात्मक गतिविधि

एक नदी थी। उसकी कलकल पैरों में बजते **घुँघरू** जैसी लगती थी। वह **ऊँची** चट्टानों में सहजता से फिसल जाती। **ठंडी** हवा उसे सावधान करती कि आगे घमंड से **खड़ी** चट्टान है। पर नदी पहाड़ों के बीच **सँकरे** रास्तों से निकल जाती। **शांत** खड़े चीड़ के पेड़ पीछे छोड़ देती। मैदानों में **जंगली** फूल नदी को इशारे से बुलाते, पर वह अपने रूप पर इठलाती **कहीं** नहीं रुकती। उसके निकल जाने पर किनारे के **पंक** पर जानवर अपने पदचिह्न **अंकित** करते खेलते। वह रात में चलते-चलते अपनी **चंचल** आँखों से **अँधेरे** को चीरते **चाँद** को देखती। उसे **पसंद** था, सारे **संसार** में आज़ादी से घूमना।

3. वर्तनी एवं उच्चारण

1 हड़ताल कृतज्ञ मौलिक शिक्षा बुद्धिमान बारात वधू एकैक
त्योहार विषैला पैतृक आज्ञा योग कंगन कंचन

2 द्रष्टि – 'र' के प्रयोग संबंधी पड़ाई – व्यंजन संबंधी
सन्यासी – अनुस्वार संबंधी कोशल – मात्रा संबंधी
विग्यान – व्यंजन संबंधी पती – मात्रा संबंधी

बहुविकल्पी प्रश्न

1 (क) **2** (ख) **3** (ग) **4** (ख)

रचनात्मक गतिविधि

कृतज्ञ पाँचवीं गूँज स्थायी प्राण तृण प्रसाद थैला
गणित हानि कनिष्ठ शर्मीला

4. शब्द विचार

1 (क) स्रोत के आधार पर शब्दों के चार भेद हैं–

1. तत्सम शब्द 2. तद्भव शब्द 3. देशज शब्द 4. विदेशी शब्द

(ख) तद्भव शब्द संस्कृत के तत्सम शब्दों का ही हिंदी में परिवर्तित रूप होते हैं। जैसे दुग्ध – दूध, दंत – दाँत आदि।

(ग) यौगिक शब्द दो सार्थक शब्दों के मिलने से बनते हैं। वाक्य की आवश्यकतानुसार इनका प्रयोग होता है जबकि योगरूढ़ शब्द वे यौगिक शब्द होते हैं जो किसी निश्चित अर्थ के लिए रूढ़ हो गए हों।

उदाहरण – यौगिक – शिक्षामंत्री, बैलगाड़ी आदि।

योगरूढ़ – नीलकंठ, दशानन आदि।

2 मयूर क्षेत्र दधि दंत

3 (क) ✗ (ख) ✗ (ग) ✓ (घ) ✗ (ङ) ✗

4

चश्मा – ऐनक	ज़मीन – भूमि	कॉलेज – महाविद्यालय
कैदी – बंदी	गरीब – निर्धन	हुक्म – आदेश

5

फूल – रूढ़	रसोईघर – यौगिक	घर – रूढ़
पंकज – योगरूढ़	नीलकंठ – योगरूढ़	विद्यार्थी – यौगिक

बहुविकल्पी प्रश्न

1 कोई विकल्प सही नहीं है। **2** (ग) **3** (ग) **4** (क)

रचनात्मक गतिविधि

[1]गो	दा	[2]म	[3]त	[5]ज
म		त्स	र	[6]वा
ती	[7]प	[4]य	की	न
[8]पं	[9]पी	तां	ब	[12]र
[10]क	ता	र	[11]ह	फ़्ता
ज				र

5. संज्ञा

1 (क) हिंदी व्याकरण में संज्ञा के तीन भेद माने गए हैं–

व्यक्तिवाचक संज्ञा – ताजमहल, हिमालय, सचिन

जातिवाचक संज्ञा – इमारत, पहाड़, लड़का

भाववाचक संज्ञा – ममता, मिठास, प्रभुता

(ख) कभी-कभी किसी जाति या वर्ग का कोई व्यक्ति इतना प्रसिद्ध हो जाता है कि उसे उस समुदाय के नाम से पहचाना जाने लगता है। तब वह जातिवाचक संज्ञा शब्द व्यक्तिवाचक संज्ञा के रूप में प्रयुक्त होने लगता है; जैसे – नेताजी ने देश की आज़ादी में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इस वाक्य में नेताजी शब्द जातिवाचक है परंतु उसका प्रयोग व्यक्तिवाचक संज्ञा के रूप में किया गया है।

(ग) भाववाचक संज्ञाओं को केवल अनुभव किया जा सकता है। तथा ये प्रायः एकवचन रूप में प्रयुक्त होती हैं।

(घ) जातिवाचक संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया तथा अव्यय शब्दों से भाववाचक संज्ञा शब्द बनाए जा सकते हैं; जैसे – मानव – मानवता, बहादुर – बहादुरी, अपना – अपनापन आदि।

2 (क) चतुराई (ख) दुश्मन (ग) अपनापन (घ) धुलाई (ङ) विभीषण

3 फूल – जातिवाचक, ट्रेन – जातिवाचक, ममता – भाववाचक

गांधी जी – व्यक्तिवाचक, दुश्मनी – भाववाचक, कुरान – व्यक्तिवाचक

राष्ट्र – जातिवाचक, राजधानी – जातिवाचक, लड़ाई – भाववाचक

निकटता – भाववाचक, कमल – व्यक्तिवाचक, मातृत्व – भाववाचक

4 जागना, हरा, अहं, बच्चा, समीप, जलना, ठंड, मम्, बाहर

5 (क) बुढ़ापे में व्यक्ति लाठी टेककर चलता है।

(ख) सबके ठगी स्वभाव ने रमेश का अहित किया।

(ग) व्यक्तित्व की पहचान महान कर्म से होती है।

(घ) सच्चाई उस नेता की पहचान होती है जो जनता का सेवक होता है।

बहुविकल्पी प्रश्न

1 (क) **2** (ख) **3** (घ) **4** (ख)

रचनात्मक गतिविधि

1. बनारस 2. सज्जन 3. नयापन 4. मानव 5. वकील 6. लड़का
7. कालिमा 8. कमाई 9. ईश्वर 10. रजनी

6. लिंग

1 (क) व्याकरण में ऐसे शब्द जो पुरुष या स्त्री जाति का बोध कराएँ, उन्हें लिंग कहते हैं।

(ख) हिंदी व्याकरण में लिंग के दो भेद माने गए हैं–

पुल्लिग – पुरुष जाति का बोध कराने वाले शब्द पुल्लिग कहलाते हैं। जैसे – कुत्ता, बंदर।

स्त्रीलिंग – स्त्री जाति का बोध कराने वाले शब्द स्त्रीलिंग कहलाते हैं। जैसे – सहेली, बगिया आदि।

(ग) लिंग की पहचान करते समय हमें ध्यान रखना चाहिए कि कुछ शब्द हमेशा पुल्लिग में ही प्रयुक्त होते हैं तथा कुछ शब्द सदा स्त्रीलिंग में ही प्रयुक्त होते हैं। निर्जीव वस्तुओं के लिंग परंपरागत रूप से नियत हैं। अधिकतर अकारांत शब्द पुल्लिग तथा आकारांत शब्द स्त्रीलिंग माने जाते हैं। प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति आदि कुछ पदनाम स्त्रीलिंग और पुल्लिग में समान रहते हैं।

(घ) जलेबी, इमरती, मिठाई, चटनी, चाय, पकौड़ी, खटाई, मिर्ची आदि।

(ङ) मकान, हिमालय, भारत, सहयोग, सोना

2 (क) स्त्रीलिंग (ख) पुल्लिग, स्त्रीलिंग (ग) स्त्रीलिंग

(घ) पुल्लिग, स्त्रीलिंग (ङ) पुल्लिग

3 पुत्र लेखिका नर गुड्डा युवती विद्वान चौधराइन ससुर

बकरा चुहिया मादा खरगोश कवयित्री

4 महारानी मालिन दुल्हन नौकर देवता विदुषी

5 क्रोध – रावण को क्रोध आ गया।

सेना – सेना अपने पड़ाव पर पहुँच गई।

मच्छर – मच्छर मर गया।

शक्ति – एकता में शक्ति होती है।

हीरा – राजा के पास बहुमूल्य हीरा था।

बहुविकल्पी प्रश्न

1 (ख) **2.** (घ) **3.** (ग) **4.** (क)

रचनात्मक गतिविधि

गोलू ने देखा एक सपना
उसमें देखे बाघिन-बाघ
बाघ की थी लंबी पूँछ
उसके पीछे थे वर-वधू।
वधू के साथ थे पंडित-पंडिताइन
वे दोनों थे बुद्धिमान-बुद्धिमती
हाथ में थे उनके कटोरा-कटोरी
तभी आ गए मौसा-मौसी।
लाए थे वे बंदर-बंदरिया
पर थे दोनों बूढ़ा-बुढ़िया।

7. वचन

1 (क) शब्द के जिस रूप से उसके एक या अनेक होने का बोध हो उसे वचन कहते हैं। जैसे – किताब – किताबें, पत्ता – पत्ते, मक्खी – मक्खियाँ आदि।

(ख) प्राण, दर्शन, समाचार, आँसू, होश।

(ग) आदर प्रकट करने के लिए एक व्यक्ति के लिए भी बहुवचन शब्द का प्रयोग होता है। इसे ही आदरार्थ बहुवचन कहते हैं। जैसे – दादा जी कल आएँगे। इसमें दादा जी एकवचन हैं परंतु आदरार्थ उनके लिए 'आएँगे' बहुवचन सूचक शब्द प्रयुक्त किया है।

2 (क) रस्सी (ख) पतंगें (ग) घड़े (घ) रास्ता (ङ) मित्रगण

3 (क) छुट्टियों में हम दादा-दादी के घर जाएँगे।

(ख) जनता अपना प्रतिनिधि खुद चुनती है।

(ग) आकाश में तारे चमक रहे हैं।

(घ) सुभाष चंद्र बोस नेता जी कहलाते हैं।

(ङ) पानी गिर रहा है।

4 आँखें गुरु कमरा बच्चियाँ कहानियाँ पत्ते नाटकों ऋतुएँ सब्ज़ियाँ

5 (क) आपलोग (ख) नदियाँ (ग) छात्रगण (घ) आँसुओं (ङ) बाहें

बहुविकल्पी प्रश्न

1 (क) (ग) **2.** (क) **3.** (ख) **4.** (घ)

रचनात्मक गतिविधि

बच्चे स्वयं करें।

8. कारक

1 (क) शब्दों का वह रूप जो संज्ञा या सर्वनाम का क्रिया तथा वाक्य के अन्य शब्दों के साथ संबंध बताता है, कारक कहलाता है।

(ख) कारक चिह्नों की पहचान वाक्य में प्रश्न पूछकर/लगाकर की जाती है। सभी कारकों की पहचान के लिए अलग-अलग प्रश्न लगाए जाते हैं।

(ग) कारक के आठ भेद हैं–

1. कर्ता 2. कर्म 3. करण 4. संप्रदान 5. अपादान

6. अधिकरण 7. संबंध 8. संबोधन

(घ) इनकी पहचान 'किससे' और 'कहाँ से' प्रश्न लगाकर की जा सकती है। 'किससे' के उत्तर में आने वाले कारक 'करण' कारक और 'कहाँ से' के उत्तर में आने वाले कारक 'अपादान' कारक होंगे।

2 (क) ✓ (ख) ✓ (ग) ✗ (घ) ✗ (ङ) ✓

3 (क) में (ख) को, से (ग) को (घ) ने, को (ङ) से

4 (क) इस पुस्तक में सौ पृष्ठ हैं। (ख) ट्रेन स्टेशनों पर नहीं रुकी।

(ग) पेंसिल से चित्र बनाइए। (घ) मुझे गाना अच्छा लगता है।

(ङ) शब्द का अर्थ बताइए। (च) आराम के लिए कुर्सी लाइए।

5 (क) करण कारक (ख) अपादान कारक (ग) अपादान कारक

(घ) करण कारक (ङ) अपादान कारक

बहुविकल्पी प्रश्न

1 (ख) **2** (क) **3** (ग) **4** (घ)

रचनात्मक गतिविधि

कंजूस करोड़ीमल **को** चप्पल **को** ठीक करा लेना, सही लगा। लेकिन कम पैसों **के द्वारा** मरम्मत करने वाला दूर बैठता था। उसे लगा शायद वहाँ पहुँचने **के** पहले ही चप्पल साथ न छोड़ दे। वह लोगों **से** नज़रें बचाकर चप्पलों **को** पकड़कर जल्दी-जल्दी चलने लगा। परंतु सौ गज़ **के** रास्ते **ने** उसे सौ मील की दूरी का एहसास करा दिया। उसे लगा जैसे पूरा बाज़ार उसे देखकर हँस रहा है। अनुमान कुछ हद तक सही भी था, पीछे हँसकर कोई अपने साथी **को** कह रहा था, "आज तक कंजूस करोड़ीमल **की** कहानियाँ सुनी थीं, आज **उसको** देख भी लिया।"

9. सर्वनाम

1 (क) संज्ञा के स्थान पर प्रयोग किए जाने वाले शब्द सर्वनाम कहलाते हैं। जैसे – मैं, तुम, आप, वे, हम, वह आदि।

(ख) सर्वनाम के छह भेद हैं–

1. पुरुषवाचक सर्वनाम – उत्तम पुरुषवाचक, मध्यम पुरुषवाचक, अन्य पुरुषवाचक
2. निश्चयवाचक सर्वनाम
3. अनिश्चयवाचक सर्वनाम
4. संबंधवाचक सर्वनाम
5. प्रश्नवाचक सर्वनाम
6. निजवाचक सर्वनाम

(ग) आदर प्रकट करने के लिए एकवचन के लिए बहुवचन जैसे सर्वनाम प्रयुक्त किए जाते हैं।

(घ) किसी व्यक्ति, वस्तु या स्थान के विषय में प्रश्न करने के लिए प्रश्नवाचक सर्वनाम का प्रयोग करते हैं।

(ङ) लिंग परिवर्तन का सर्वनाम पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। ऐसी स्थिति में क्रिया शब्दों से सर्वनाम शब्द के लिंग की पहचान की जाती है।

2 (क) तुम – मध्यम पुरुषवाचक; मुझे – उत्तम पुरुषवाचक; मैं – उत्तम पुरुषवाचक
तुम्हें – मध्यम पुरुषवाचक

(ख) मेरा – उत्तम पुरुषवाचक

(ग) आप – मध्यम पुरुषवाचक; अपने-आप – निजवाचक

(घ) कुछ – अनिश्चयवाचक

(ङ) जिसकी, उसकी – संबंधवाचक

3 तुम – तुम तोते को जाने दो।

वह – वह अपने घर चला गया।

कौन – कौन आया है?

अपने-आप – उसे रास्ता पता है। वह अपने-आप चला जाएगा।

जितना-उतना – जो जितना कर्म करेगा वो उतना फल पाएगा।

कोई – परदे के पीछे कोई खड़ा है।

4 (क) दरवाज़े पर कोई खड़ा है।

(ख) अपना काम अपने आप ही कीजिए।

(ग) तुम्हें अच्छा व्यवहार करना चाहिए।

(घ) किसका सामान लाए हो?

(ङ) जैसा करोगे वैसा भरोगे।

(च) सरदार पटेल! उन्हें कौन नहीं जानता?

बहुविकल्पी प्रश्न

1 (ख) **2.** (क) **3.** (घ) **4.** (क)

रचनात्मक गतिविधि

कुसुम – अरे मालती, तुम इतनी तेज़ क्यों भाग रही हो?

मालती – मैं क्लास में जा रही हूँ। घंटी बज गई है।

स्नेहा – न जाने तुम कहाँ रहती हो! वहाँ क्या हो रहा है, पता भी है?

कुसुम – यह क्या जाने बेचारी! पढ़ने से फुर्सत ही नहीं मिलती। (सब हँसती हैं)

मालती – कुछ बताओगी भी या हँसती ही रहोगी।

स्नेहा – अरे मेरी रानी! तुम्हें क्रोध भी आता है।

मालती – भई, मैं चली। मैं इस तरह मज़ाक में समय खोना नहीं जानती। मुझे काम करना है।

10. विशेषण

1 (क) संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताने वाले शब्द विशेषण कहलाते हैं। विशेषण जिनकी विशेषता बताते हैं, उन्हें विशेष्य कहते हैं। जैसे – आप बुद्धिमान हैं। इसमें बुद्धिमान विशेषण तथा आप विशेष्य हैं।

(ख) विशेषण तो संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताते हैं परंतु प्रविशेषण स्वयं विशेषण की विशेषता बताते हैं। जैसे – चाय बहुत मीठी है।

(ग) सर्वनाम शब्द संज्ञा के स्थान पर प्रयोग किए जाते हैं जबकि सार्वनामिक विशेषण वह है जो संज्ञा शब्द के पहले लगकर उसकी विशेषता बताए। जैसे – मैं (सर्वनाम) खेल रहा हूँ। वह (सार्वनामिक विशेषण) खिलाड़ी मुझे जानता है।

(घ) विशेषण के चार भेद किए गए हैं–

1. गुणवाचक विशेषण – सुनहरा
2. संख्यावाचक विशेषण – पाँच केले
3. परिमाणवाचक विशेषण – थोड़ी चीनी
4. सार्वनामिक विशेषण – कोई लड़का

2 (क) मेरी (ख) इस (ग) थोड़े (घ) तुम्हारा

3

विद्यालय – सुंदर, बड़ा	समाचारपत्र – दैनिक, वार्षिक
नागरिक – श्रेष्ठ, ज़िम्मेदार	मित्र – घनिष्ठ, नया
डॉक्टर – अच्छा, पाबंद	दूध – मिलावटी, ताज़ा
स्मारक – प्राचीन, अद्भुत	रंग – काला, लाल

4 (क) सुंदर – बगिया में सुंदर फूल खिले हैं।

(ख) मेरी – वह मेरी बहन है।

(ग) बहुत – सड़कों पर बहुत पानी भरा है।

(घ) पाँच – पाँच पतंगें और लाइए।

(ङ) पाँच किलोमीटर – उसका स्कूल पाँच किलोमीटर की दूरी पर है।

(च) धार्मिक – उसकी माता जी धार्मिक हैं।

5 सुखी पढ़ाकू चरित्रवान पिछला रंगीन ऊपरी यही/ऐसा
मुझ-सा भूखा सेवक

बहुविकल्पी प्रश्न

1 (ख) **2** (क) **3** (क) **4** (क)

रचनात्मक गतिविधि

जीवक **प्राचीन** भारत के **प्रसिद्ध** आयुर्वेदाचार्य थे। उनके अंदर **नैसर्गिक** प्रतिभा थी। जीवक को बचपन में जब पता चला कि वह **अनाथ** बालक है, तो उन्हें **बहुत** कष्ट हुआ था। **सम्राट** बिंबिसार के पुत्र अभय ने उन्हें मिट्टी के ढेर पर पाया। चूँकि वे **विषम** परिस्थितियों में भी जीवित रहे इसलिए उनका नाम जीवक रखा गया। जीवक ने **दृढ़** निश्चय किया कि मैं **अथक** परिश्रम से योग्यता प्राप्त करूँगा। उन्होंने तक्षशिला विश्वविद्यालय से शिक्षा प्राप्त की और **कुशल** वैद्य बन गए। वहाँ से चलकर वे **भव्य** नगरी अयोध्या पहुँचे। **पवित्र** मंदिरों और **विशाल** भवनों वाली इस नगरी में उन्होंने वहाँ के वैद्यों से मिलने का विचार बनाया और अयोध्या के वैद्य **आचार्य** देवदत्त से मिलने गए।

11. क्रिया

1 (क) किसी कार्य के होने या करने का बोध कराने वाले शब्दों को क्रिया कहते हैं। जैसे – खेलना, गाना, पढ़ना आदि।

(ख) सकर्मक क्रिया के दो भेद हैं – एककर्मक क्रिया, द्विकर्मक क्रिया।
वे सकर्मक क्रियाएँ जिनमें केवल एक ही कर्म हो एककर्मक क्रिया कहलाती है तथा वे सकर्मक क्रियाएँ, जिनमें दो कर्म हों, द्विकर्मक क्रियाएँ कहलाती हैं।

(ग) रचना के आधार पर क्रिया के पाँच भेद हैं–
1. सामान्य क्रिया 2. संयुक्त क्रिया 3. प्रेरणार्थक क्रिया
4. नामधातु क्रिया 5. पूर्वकालिक क्रिया

(घ) प्रेरणार्थक क्रिया की विशेषता है कि इसमें प्रेरणा देकर किसी और से काम करवाया जाता है। जैसे – नानी ने बच्चे को झूला झुलवाया।

(ङ) इस क्रिया की मूल धातु नाम (संज्ञा) होते हैं। नामधातु क्रिया किसी संज्ञा, सर्वनाम या विशेषण में 'ना' जोड़कर बनाई जाती है; जैसे – झूठ – झुठलाना, दुख – दुखाना आदि।

2 (क) ✓ (ख) ✓ (ग) ✗ (घ) ✓

3 (क) धातु (ख) ना (ग) अकर्मक, सकर्मक (घ) लिंग, वचन (ङ) काम

4 लगाए लगते हैं रखकर भागा मनाएँगे पिलाओ पिलाते रहोगे

5 खड़े हो गए – अकर्मक लाए – सकर्मक
छाँट-काट रहा है – सकर्मक सो रहा है – अकर्मक
दिखाया – सकर्मक दिखाओ – सकर्मक

6 (क) सामान्य (ख) प्रेरणार्थक (ग) सामान्य क्रिया (घ) संयुक्त क्रिया

बहुविकल्पी प्रश्न

1 (क) **2** (ग) **3** (ख) **4** (ख)

रचनात्मक गतिविधि

मेरा नाम सुरभि है। मुझे आम **खा**ना पसंद है। मुझे **हँसकर** जीवन में आगे बढ़ने वाले लोग पसंद हैं। **पढ़ाई** करना भी मुझे अच्छा **लग**ता है। थोड़ी-सी परेशानी में **रो** देना, बहादुर इनसान की पहचान नहीं है। मुझे नई-नई चीज़ें **बना**ते रहने में, सबको **दे**ते रहने में असीम खुशी मिलती है। किसी का कष्ट **सुन**कर **रो उठ**ने वाला दिल ही इनसानियत का सबक सिखा सकता है। किसी का कष्ट **ले** लेना और किसी की झोली खुशियों से **भर** देना ही हमें दूसरों से **हटकर** अलग मार्ग पर ले जाता है। यही मानवता की सच्ची **जीत** है।

12. काल

1 (क) क्रिया के जिस रूप से उसके होने के समय का बोध हो, उसे व्याकरण में काल (समय) कहते हैं।

(ख) क्रिया के तीन काल हैं–

1. वर्तमान काल 2. भूतकाल 3. भविष्यत् काल

(ग) भूतकाल के छह भेद हैं–

1. सामान्य भूतकाल – मैंने पानी पी लिया।
2. आसन्न भूतकाल – बारिश रुक गई है।
3. पूर्ण भूतकाल – बच्चा सो गया था।
4. अपूर्ण भूतकाल – कुत्ता भौंक रहा था।
5. संदिग्ध भूतकाल – वह जा चुका होगा।
6. हेतुहेतुमद् भूतकाल – माँ दवा लेती तो ठीक हो जाती।

(घ) जहाँ काम जारी हो, पूरा न हुआ हो, उसे अपूर्ण वर्तमान काल कहेंगे। जैसे – फुलवारी महक रही है।

2 समीर कविता लिख चुका होगा। भूतकाल संदिग्ध
यदि तुम नहीं सोते तो रसगुल्ला मिलता। भूतकाल हेतुहेतुमद्
संभवत: आज बारिश होगी। भविष्यत् काल संदिग्ध

गाड़ी रुक गई है।	भूतकाल	आसन्न
माता ने तुम्हें बुलाया होगा।	भूतकाल	संदिग्ध
तुम चाहते, तो सब ठीक हो जाता।	भूतकाल	हेतुहेतुमद्

3 (क) शायद वह मेरे घर आ जाए।

(ख) कम खाते तो तुम जाग रहे होते।

(ग) वह मेरी प्रशंसा कर रही है।

4 (ख) खाया, खाता, खाएगा (ग) देखा, देखता, देखेगा

(घ) हँसा, हँसता, हँसेगा (ङ) चला, चलता, चलेगा

(च) रोया, रोता, रोएगा

5 मामा ने चित्र बनाया। – सामान्य भूतकाल

रानी अभी-अभी गई है। – आसन्न भूतकाल

संभवत: अधिकारी दौरे पर आएँ। – संभाव्य भविष्यत् काल

तुम आते, तो मैं भी चलता। – हेतुहेतुमद् भूतकाल

तुम कब तक आओगे? – सामान्य भविष्यत् काल

डाकुओं की योजना विफल हो गई थी। – पूर्ण भूतकाल

बहुविकल्पी प्रश्न

1. (क) **2.** (ग) **3.** (ख) **4.** (ख)

रचनात्मक गतिविधि

"जिमी, कल सुबह तुम यहाँ से रिहा कर दिए जाओगे" (सामान्य भविष्यत्)। जेल के वार्डन ने जिमी को रिहाई पत्र थमाते हुए कहा (सामान्य भूतकाल)। कागज़ थामते हुए जिमी ने कोई उत्सुकता नहीं दिखाई (सामान्य भूतकाल)। चार वर्ष की कैद में से वह दस महीने की सज़ा काट चुका था (पूर्ण भूतकाल)। उसे उम्मीद थी कि जेल में और तीन महीने ही रहना पड़ेगा (सामान्य भविष्यत्)। क्योंकि उसका दोस्त उसकी सज़ा माफ़ करवाने की कोशिश में लगा था (पूर्ण भूतकाल)। "तो जिमी", वार्डन ने उसे समझाते हुए कहा, (सामान्य भूतकाल) "अब आदमी बनकर दिखाओ (सामान्य भूतकाल)। मैं जानता हूँ कि तुम दिल के बहुत भले हो (सामान्य वर्तमान)। अब ये तिज़ोरियाँ तोड़ना छोड़ो।" (सामान्य भविष्यत्) "क्रोनिन, इसे ले जाओ"। (हेतुहेतुमद्)। वार्डन ने मुसकराते हुए कहा (सामान्य भूतकाल)। "सुबह सात बजे इसे रिहा कर देना।" (सामान्य भविष्यत्)। वार्डन का मानना था (पूर्ण भूतकाल) कि जिमी अपना शेष जीवन एक नेक नागरिक की भाँति व्यतीत करेगा (संभाव्य भविष्यत्)। जेल के रजिस्टर में जिमी के आगे 'गवर्नर द्वारा क्षमादान' लिख दिया गया था (पूर्ण भूतकाल)। जिमी बाहर की खिली धूप में निकल आया (सामान्य भूतकाल)। वह स्टेशन की ओर चल पड़ा (सामान्य भूतकाल)। तीन घंटे बाद वह डॉटन कैफ़े में था (पूर्ण भूतकाल)। जहाँ उसका दोस्त माइक उसका इंतज़ार कर रहा था (अपूर्ण भूतकाल)।

13. अविकारी शब्द (अव्यय)

1 (क) क्रिया की विशेषता बताने वाले शब्दों को क्रियाविशेषण कहते हैं। जैसे– सौम्या **खूब** पढ़ती है। इस वाक्य में 'खूब' शब्द 'पढ़ती' क्रिया की विशेषता बता रहा है, इसलिए यह क्रियाविशेषण शब्द है।

(ख) क्रियाविशेषण के चार भेद हैं–

1. कालवाचक – क्रिया के काल के विषय में बताने वाले – दूध **प्रतिदिन** पीना चाहिए।
2. स्थानवाचक – क्रिया के होने का स्थान बताने वाले – **यहाँ** बैठ जाओ।
3. परिमाणवाचक – क्रिया की मात्रा बताने वाले – **बहुत** सो चुके, अब उठ जाओ।
4. रीतिवाचक – क्रिया के होने का तरीका बताने वाले – बौना **ज़ोर-से** हँसने लगा।

(ग) विशेषण शब्द संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताते हैं, जबकि क्रियाविशेषण शब्द क्रिया की विशेषता बताते हैं; जैसे–

कविता ने **सुंदर** कपड़े पहने हैं। – विशेषण

ज़्यादा सोने से सुस्ती आती है। – क्रियाविशेषण

2 धीरे-धीरे – रीतिवाचक रात भर – कालवाचक खूब – परिमाणवाचक
ऊँचा – परिमाणवाचक ध्यानपूर्वक – रीतिवाचक चुपचाप – रीतिवाचक

3 (क) यहाँ (ख) अधिक (ग) अब (घ) ऊँचाई पर (ङ) अब
(च) कई दिनों से

4 (क) अचानक बादल घिर आए।
(ख) मधु प्रतिदिन नहाती है।
(ग) इतना सोना पर्याप्त है।
(घ) मुझे अपनी बहन के व्यवहार का अत्यंत खेद है।
(ङ) पत्र को ध्यानपूर्वक पढ़ो।

5 (क) ✗ (ख) ✓ (ग) ✗ (घ) ✗

बहुविकल्पी प्रश्न

1 (ग) **2** (ग) **3** (ख) **4** (घ)

रचनात्मक गतिविधि

सड़क पर एक दुर्घटना हो गई है। एक कारवाले ने साइकिल सवार एक बच्चे को टक्कर मारकर गिरा दिया है। बच्चा ज़ोर-से रो रहा है। लोगों की भीड़ भी धीरे-धीरे जमा होने लगी है। कुछ लोग गाड़ी वाले को दोषी मान रहे हैं तो कुछ बच्चे को। परंतु किसी ने भी गिरे हुए बच्चे को नहीं उठाया है। पीछे से एक पुलिसवाला भी आ गया है। अब शायद वह बच्चे की कुछ सहायता करे और गाड़ीवाले के बारे में भी उचित निर्णय ले।

14. अन्य अविकारी शब्द

1 (क) जो शब्द दो शब्दों, शब्द-समूहों, वाक्यों या उपवाक्यों को जोड़कर या अलग कर एक रूप प्रदान करें उन्हें समुच्चयबोधक शब्द कहते हैं।

(ख) समुच्चयबोधक शब्दों की विशेषता है कि ये दो शब्द समूहों, उपवाक्यों या वाक्यों को जोड़ने का कार्य करते हैं इसलिए इन्हें योजक भी कहते हैं।

(ग) जो शब्द वाक्य के संज्ञा/सर्वनाम का संबंध दूसरे शब्दों से बताए उसे संबंधबोधक कहते हैं। जैसे – मंदिर के सामने भिखारी है।

(घ) संबंधबोधक शब्द वाक्य के संज्ञा/सर्वनाम का संबंध दूसरे शब्दों से बताते हैं जबकि क्रियाविशेषण क्रिया की विशेषता बताते हैं। संबंधबोधक के साथ प्राय: 'के' कारक चिह्न लगता है।

(ङ) विस्मयादिबोधक मन के भावों को प्रकट करते हैं। इनका रूप लिंग, वचन, कारक के अनुसार नहीं बदलता। इनके साथ विस्मयादिबोधक चिह्न लगाते हैं।

2 (क) रंजीता कल नहीं आएगी क्योंकि उसे कुछ काम है।

(ख) नदी के किनारे नाव बँधी है।

(ग) हास्य नाटक देखा। वाह! खूब हँसे।

(घ) वाह! क्या चित्र बनाया है।

(ङ) अमित और मनीषा के अंक बराबर आए।

(च) किरण के अलावा किसी और पर मुझे भरोसा नहीं।

(छ) अरे रे! बस बेकाबू हो गई।

3 (क) और (ख) पर (ग) इसलिए (घ) क्योंकि

4 (क) के अंदर (ख) के आगे (ग) के कारण (घ) के बिना (ङ) के विपरीत

5 (क) भाई के साथ बहन भी आई है। (ख) घर के सामने पार्क है।

(ग) कोट के नीचे कमीज़ पहनी है। (घ) छत के ऊपर मोर नाच रहे हैं।

(ङ) वाह! कितना सुंदर तोता है। (च) उफ़! बहुत दर्द हो रहा है।

(छ) शाबाश! ये इनाम मुबारक हो।

बहुविकल्पी प्रश्न

1 (ख) 2. (घ) 3. (क) 4. (ख)

रचनात्मक गतिविधि

यह मैंने आज ही जाना **कि** एक फुट धूल वाली सड़क भी पक्की कहला सकती है। मेरे दोस्तों ने कहा था **कि** साइकिल **के ऊपर** चढ़ना **ताकि** धूल नाक तक न आए। धूल भी मैदे की **तरह** बारीक होने के कारण हवा से भी बाजी मारती थी। मेरी नाक **के ऊपर** इतनी जमा हो गई **कि** कोई मुझे कोई मिल जाए तो पहचान न सके। उतनी धूल में तो ब्रह्मा नामक कुम्हार मेरे जैसा मिट्टी का एक और पुतला गढ़ देता।

15. विराम चिह्न

1 (क) जिन चिह्नों का प्रयोग लिखते-पढ़ते समय, शब्दों के बीच विराम, अंतर तथा कथन के भाव-अर्थ को स्पष्ट करने के लिए किया जाए, वे विराम-चिह्न कहलाते हैं।

(ख) उद्धरण चिह्न दो रूपों में प्रयुक्त होता है। इकहरा चिह्न किसी व्यक्ति के उपनाम, रचना आदि में प्रयुक्त होता है; जैसे – सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' और दोहरा उद्धरण चिह्न किसी कथन को ज्यों का त्यों लिखने के लिए प्रयुक्त करते हैं; जैसे – तिलक ने कहा, "स्वतंत्रता मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है।" जबकि कोष्ठक का प्रयोग किसी शब्द को और अधिक स्पष्ट करने के लिए करते हैं; जैसे – पीछे से मुकुल (मीना का बड़ा भाई) उसे पुकारते हुए दौड़ा चला आ रहा था।

(ग) 1. मधु मनु गौतमी और पूजा झरना देखने पहुँचे उफ यह क्या हुआ पूजा का पैर फिसल गया।

2. दरवाज़ा खोलो मत बंद करो।

3. राधेकृष्ण कहकर भिखारी ने झोली फैला दी।

(घ) उद्धरण चिह्न का इकहरा रूप किसी व्यक्ति के उपनाम, रचना आदि में प्रयुक्त होता है; जैसे – सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' और दोहरा उद्धरण चिह्न किसी कथन को ज्यों का त्यों लिखने के लिए प्रयुक्त करते हैं। जैसे – तिलक ने कहा, "स्वतंत्रता मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है।"

2 (क) ✗ (ख) ✓ (ग) ✗ (घ) ✓ (ङ) ✓

3

प्रश्नसूचक चिह्न	?	अल्पविराम	,
योजक चिह्न	-	लाघव चिह्न	०
पूर्णविराम	।	निर्देशक चिह्न	–
त्रुटिपूरक चिह्न	ʌ	उद्धरण चिह्न	" "

4 (क) वह चिल्लाया, "मैं बहरा नहीं हूँ।" (ख) कुणाल–"क्या मैं आ सकता हूँ।"
(ग) मम्मी-पापा और मैं बाज़ार गए। (घ) शाबाश! बहुत अच्छा काम किया।
(ङ) रात-दिन मेहनत क्यों करें? (च) डॉ॰ अब्दुल कलाम महान हैं।

बहुविकल्पी प्रश्न

1 (ग) **2.** (ख) **3.** (क) **4.** (घ)

रचनात्मक गतिविधि

लड़की – तुम मज़ेदार हो। बहुत-बहुत अच्छे हो।
लैटरबॉक्स – पर मैं बहुत लाल हूँ।

लड़की – लैटरबॉक्स, तुम सच्ची बहुत अच्छे हो। पर मुझे न अभी भी बिलकुल सच नहीं लग रहा है।

लैटरबॉक्स – कभी न देखी हो, ऐसी चीज़ देख लो यों ही लगता है। तू रहती कहाँ है?

लड़की – मैं अपने घर में रहती हूँ।

लैटरबॉक्स – बहुत अच्छे, हर किसी को अपने घर ही रहना चाहिए। पर तेरा घर है कहाँ?

लड़की – घर हमारी गली में है।

लैटरबॉक्स – पर यह गली है कहाँ?

लड़की – हमारी गली एक बड़ी सड़क पर है। हाँ, उस सड़क पर आदमी-ही-आदमी आते-जाते रहते हैं।

लैटरबॉक्स – पर तुम्हारी इस सड़क का नाम क्या है?

इकाई प्रश्न पत्र 1

1 भाषा का क्षेत्र विस्तृत होता है। उसका समृद्ध साहित्य होता है। एक भाषा के अंतर्गत अनेक बोलियाँ आ सकती हैं। जबकि बोली का क्षेत्र सीमित होता है। बोली में केवल लोक साहित्य का सृजन होता है।

2 श – ऊष्म क्ष – संयुक्त ह – ऊष्म

3 रवींद्र – इ + इ समयाभाव – अ + अ संकल्प – म् + क

4 रूढ़ – एक ही वस्तु या अर्थ के लिए रूढ़ हो गए शब्द – नल, पतंग, चरखा आदि।

यौगिक – दो या अधिक मूल शब्दों के योग से बने शब्द – बैलगाड़ी, सत्यकथा आदि।

योगरूढ़ – एक वस्तु या व्यक्ति के लिए रूढ़ हो गए यौगिक शब्द – नीलकंठ, लंबोदर आदि।

5 नेता जी का बलिदान व्यर्थ नहीं जा सकता।

आज तो हर तरफ़ रावण-ही-रावण हैं।

6 होली शक्ति

7 हस्ताक्षर प्राण

8 परसर्ग विभक्ति

9 (क) पुरुषवाचक (ख) निजवाचक (ग) अनिश्चयवाचक

10 (क) परिमाणवाचक (ख) संख्यावाचक (ग) गुणवाचक

11 प्रथम प्रेरणार्थक – नानी ने सुबोध को खाना खिलाया।

द्वितीय प्रेरणार्थक – नानी ने नौकर से सुबोध को खाना खिलवाया।

12 क्रियाविशेषण के चार भेद हैं–

1. कालवाचक – बच्चा अभी सोया है।
2. स्थानवाचक – बच्चा यहाँ सोया है।
3. रीतिवाचक – धीरे-धीरे बच्चा सो गया।
4. परिमाणवाचक – बच्चा कम सोता है।

13 (क) वहाँ कौन बैठी हैं?

(ख) अरे! आपने तो कमाल कर दिया।

(ग) रोहित, मल्लिका और सोमेश फ़ुटबॉल खेल रहे हैं।

16. शब्द-भंडार

1 (क) समान अर्थ देने वाले शब्दों को पर्यायवाची कहते हैं। जैसे – पानी – नीर, जल, तोय आदि।

कुछ शब्द अर्थ में भिन्न होते हैं परंतु समान अर्थ वाले प्रतीत होते हैं, ऐसे शब्दों को एकार्थक प्रतीत होने वाले शब्द कहा जाता है। जैसे – निर्बल – जिसमें वांछित बल न हो

दुर्बल – रोगादि के कारण बल की कमी

(ख) वाक्यांशों के लिए एक शब्द की विशेषता है कि ये भाषा के अनावश्यक विस्तार से बचाते हैं। समय और संसाधन की बचत करते हैं। लेखन में संक्षिप्तता और सौम्यता का गुण लाते हैं।

(ग) एक से अधिक अर्थ में प्रयुक्त होने वाले शब्द अनेकार्थक शब्द कहलाते हैं। जैसे– काल – मृत्यु, समय।

2

नारी – स्त्री, औरत	कमल – सरोज, जलज
मछली – मीन, मकर	यमुना – कृष्णा, कालिंदी
तलवार – कृपाण, असि	किनारा – तट, कूल
अतिथि – मेहमान, आगंतुक	नाव – नौका, तरी

3 (क) विक्रय, विस्मृति, विदेश, विपक्ष

(ख) अपमान, अपयश, अपकार, अनुचित

(ग) अनुपस्थित, अनुपयोगी, असफल, अचल

4 (क) राकेश अविराम काम कर रहा है।

(ख) रोग के कारण उसकी यह दशा हो गई।

(ग) यह रास्ता पूर्व दिशा की तरफ़ जाता है।

(घ) वह स्वभाव से बहुत उदार है।

(ङ) माला का उदर गुब्बारे की तरह फूल गया।

5 परोक्ष – जो आँखों के सामने न हो
अल्पाहारी – कम खाने वाला
अप्रत्याशित – जिसकी आशा न हो
अमूल्य – जिसका कोई मूल्य न हो
पुत्रवधू – पुत्र की पत्नी
घुड़सवार – घोड़े पर सवार
अकथनीय – जिसे कहा न जा सके
अंतर्राष्ट्रीय – कई राष्ट्रों से संबंधित

6 गति – दशा, मोक्ष
अरुण – लाल, सूर्य का सारथी
वंश – जाति, खानदान
शारदा – सरस्वती, प्राचीन
भूत – बीता हुआ कल, प्रेत
योग – ध्यान, युक्ति

7 (क) आज्ञा, अनुमति (ख) इच्छा, आशा (ग) अपराध, पाप

बहुविकल्पी प्रश्न

1 (ग) **2** (क) **3** (क) **4** (ख)

रचनात्मक गतिविधि

पर्यायवाची	**विलोम**	**एकार्थी प्रतीत होने वाले**
मनुष्य	सौभाग्य-दुर्भाग्य	अनुसंधान-आविष्कार
नर	जड़-चेतन	लज्जा-ग्लानि
आदमी	निंदा-स्तुति	सभ्यता-संस्कृति
मनुज	मित्र-शत्रु	सहयोग-सहायता
व्यक्ति	सार्थक-निरर्थक	प्रेम-स्नेह
अनेकार्थी	**समरूपी भिन्नार्थक**	**अनेक शब्दों के लिए एक शब्द**
भेद	चिर-चीर	जो सब जगह व्याप्त हो – सर्वव्यापी
मुद्रा	दूत-द्यूत	जीने की प्रबल इच्छा – जिजीविषा
अज	अंश-अंस	जिसमें कोई विकार न हो – निर्विकार
नग	शर-सर	उपकार माननेवाला – कृतज्ञ
पृष्ठ	दिन-दीन	जिसे कोई जानकारी न हो – अनभिज्ञ

17. उपसर्ग व प्रत्यय

1 (क) 'उपसर्ग' भाषा की वह स्वतंत्र इकाई है, जिसे शब्दों के पहले जोड़कर शब्द को विशेष अर्थ दिया जा सकता है जबकि 'प्रत्यय' शब्द के अंत में जुड़कर उनके अर्थ में विशेषता लाने वाले शब्दांश हैं।

(ख) उपसर्ग के चार प्रकार हैं–

1. संस्कृत के उपसर्ग
2. हिंदी के उपसर्ग
3. उर्दू के उपसर्ग
4. संस्कृत के अव्यय

(ग) प्रत्यय दो प्रकार के होते हैं– कृत प्रत्यय और तद्धित प्रत्यय। धातु अथवा क्रिया के मूल रूप में जुड़कर नया शब्द बनाने वाले प्रत्यय कृत प्रत्यय कहलाते हैं तथा संज्ञा, सर्वनाम और विशेषण आदि में जुड़कर नए शब्द बनाने वाले प्रत्यय तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं।

2 बे + गुनाह अ + चल अध + पका
नि + डर बद + तमीज़ सु + मार्ग
अ + हिंसा अंतर् + मन सु + यश

3 गुणवान लाइलाज आनंदित गैरकानूनी खिलाना अमर
समझदार पराजय कुमार्ग

4 (क) खुशबू (ख) लाइलाज (ग) प्रबल, विजय (घ) अनुज

5 पढ़ + आई गरम + ई हँस + ई सुंदर + ता
गरम + आहट निति + इक पत्र + कार सम्मान + इत

6 अव्यवहारिक निडरता निरुत्साहित दुर्गुणी विदेशी गैरइंसानी

बहुविकल्पी प्रश्न

1 (क) **2.** (ग) **3.** (क) **4.** (ख)

रचनात्मक गतिविधि

1. दयालु 2. लुभावना 3. नापसंद 4. दरबारी 5. रीझना 6. नाशवान
7. नकाबपोश 8. शर्मनाक 9. कपूत 10 तलवारबाज़

18. संधि

1 (क) संधि के तीन भेद होते हैं–

1. स्वर संधि – (i) दीर्घ संधि (ii) गुण संधि (iii) वृद्धि संधि
   (iv) यण संधि (v) अयादि संधि
2. व्यंजन संधि
3. विसर्ग संधि

(ख) गुण संधि के पहले शब्द के अंत में 'अ' या 'आ' तथा दूसरे शब्द के शुरू में 'इ' या 'ई' से मिलकर 'ए' में तथा 'उ' या 'ऊ' से मिलकर 'ओ' में बदल जाते हैं। 'अ' या 'आ' के बाद यदि 'ऋ' आता है, तो वह 'अर्' में बदलता है। जबकि वृद्धि संधि में पहले शब्द का 'अ/आ' दूसरे शब्द के शुरू में आए 'ए' या 'ऐ' से मिलकर 'ऐ' में बदल जाता है तथा 'ओ' या 'औ' से मिलने पर 'औ' में बदल जाता है।

(ग) संधि करते समय यदि पहले शब्द का अंतिम वर्ण कोई व्यंजन हो और दूसरे शब्द का पहला वर्ण व्यंजन या स्वर हो, तो दोनों के मिलने से जो परिवर्तन आएगा, उसे व्यंजन संधि कहते हैं।

(घ) पहले शब्द के अंत में विसर्ग आने पर दूसरे शब्द के साथ संधि करते समय विसर्ग में जो परिवर्तन आता है, उसे विसर्ग संधि कहते हैं।

2 नरेश सर्वोत्तम स्वाधीन चंद्रोदय परमात्मा वीरेंद्र चिकित्सालय
गंगोदक कवीश राजर्षि

3 एक + एक परीक्षा + अर्थी दया + आनंद परम + अणु
सदा + एव महा + इंद्र सु + आगत जन्म + उत्सव

4 स्वर संधि – पवन, कवींद्र, राजर्षि, नायिका, सतीश, न्यून, गणेश
व्यंजन संधि – उज्ज्वल, सद्‌गति, अभिषेक
विसर्ग संधि – दुष्कर, मनोहर

बहुविकल्पी प्रश्न

1 (ग) **2.** (क) **3.** (ख) **4.** (ख)

रचनात्मक गतिविधि

रामायण अत्यंत निश्छल परोपकार कपीश महाशय स्वागत उन्नति विच्छेद

19. समास

1 (क) शब्दों को संक्षिप्त करने की प्रक्रिया को समास कहते हैं। एक-दूसरे से संबंध रखने वाले दो या दो से अधिक शब्द अपने संबंधसूचक शब्दों का लोप कर एक शब्द में बदल जाएँ, तो इस प्रक्रिया को समास कहते हैं।

(ख) 1. तत्पुरुष समास में समस्तपद का उत्तरपद प्रधान होता है।
2. कभी-कभी समस्त पद के बीच योजक चिह्न लगा होता है।
3. समस्त पद का विग्रह करने पर कर्ता कारक और संबोधन कारक को छोड़कर अन्य कारक चिह्न आते हैं।

(ग) कर्मधारय समास में तुलना या विशेषता बताई जाती है जबकि बहुव्रीहि समास में समस्तपद की प्रधानता होती है।

(घ) समस्तपद के पदों को अलग-अलग करना समास विग्रह कहलाता है।

(ङ) संधि में दो शब्दों के दो वर्णों का मेल होता है जबकि समास में दो शब्दों का मेल होता है।

2 विद्‌यालय, दशानन, आपबीती, घुड़सवार, राजभवन, हिमालय, हरएक, हस्तलिखित

3 हिम का आलय – तत्पुरुष

जन्म से लेकर – अव्ययीभाव

नौ रात्रियों का समूह – द्विगु

माखन को चुराता है जो अर्थात कृष्ण – बहुव्रीहि

काली है जो मिर्च – कर्मधारय

कार्य में कुशल – तत्पुरुष

4 (क) यथाशक्ति – अव्ययीभाव समास (ख) सुख-दुख – द्वंद्व समास

(ग) अतिथि – अव्ययीभाव समास (घ) रसोईघर – कर्मधारय समास

(ङ) बेमतलब – अव्ययीभाव समास

5 (क) तत्पुरुष (ख) कर्मधारय (ग) बहुव्रीहि (घ) द्वंद्व

(ङ) अव्ययीभाव (च) बहुव्रीहि

बहुविकल्पी प्रश्न

1 (ख) **2.** (ग) **3.** (ग) **4.** (क)

रचनात्मक गतिविधि

9 पं	च	1 मु	खी	4 बे	श	10 क
7 व	6 आ	5 र	सो	ई	3 घ	र
च	ज	ली	अ	ह	न	क
ना	न्म	ध	न	ल	श्या	म
मृ	2 भ	र	पे	ट	म	ल
त	8 लं	बो	द	र	ण	ट

20. वाक्य विचार

1 (क) वे शब्द जो उद्देश्य के पूर्व जुड़कर उसकी विशेषता बताते हैं, उद्देश्य का विस्तार कहलाते हैं। तथा विधेय की विशेषता बताने वाले शब्द विधेय का विस्तार कहलाते हैं।

(ख) जिस वाक्य में दो सरल वाक्य, उपवाक्य बनकर, स्वतंत्र रहते हुए, योजक द्वारा जुड़कर एक पूर्ण वाक्य बनाएँ वह संयुक्त वाक्य कहलाता है। जबकि ऐसा वाक्य, जिसमें दो उपवाक्य एक-दूसरे पर आश्रित हो जाएँ, मिश्र वाक्य कहलाता है। इनमें एक वाक्य मुख्य वाक्य तथा दूसरा आश्रित उपवाक्य बन जाता है।

(ग) अर्थ के आधार पर वाक्य के 8 भेद हैं–

1. विधानवाचक 2. निषेधवाचक 3. आज्ञार्थक 4. प्रश्नवाचक
5. इच्छावाचक 6. संदेहवाचक 7. विस्मयवाचक 8. संकेतवाचक

(घ) निषेधवाचक वाक्यों में स्पष्टत: कार्य के नहीं होने का बोध होता है। जैसे– उसने झूठ नहीं बोला। जबकि संदेहवाचक वाक्यों में संदेह प्रकट किया जाता है। जैसे– शायद उसने झूठ नहीं बोला।

(ङ) संकेतवाचक वाक्यों में कार्य का होना किसी दूसरे कार्य पर निर्भर करता है। जैसे– पढ़ोगे तो अवश्य पास हो जाओगे।

2

	उद्देश्य	**विधेय**
(क)	मेरी नानी	मुझे रोज़ कहानी सुनाती हैं।
(ख)	मॉर्डन स्कूल के छात्र	मैच जीत गए।
(ग)	हरे-भरे पेड़ों को	मत काटो।
(घ)	मीनाक्षी और संदीप	दोनों डॉक्टर हैं।
(ङ)	बंदर	क्या जाने अदरक का स्वाद!

3 (क) सरल वाक्य (ख) संयुक्त वाक्य (ग) सरल वाक्य
(घ) मिश्र वाक्य (ङ) संयुक्त वाक्य

4 (क) विधानवाचक (ख) विस्मयादिबोधक (ग) प्रश्नवाचक
(घ) संकेतवाचक (ङ) निषेधवाचक

5 (क) डरावना कार्यक्रम देखकर सब डर गए। (सरल वाक्य)
– सबने डरावना कार्यक्रम देखा और डर गए। (संयुक्त वाक्य)
– क्योंकि उन्होंने डरावना कार्यक्रम देखा इसलिए डर गए। (मिश्र वाक्य)

(ख) तुम गए और वह आया। (संयुक्त वाक्य)
– तुम्हारे जाते ही वह आ गया। (सरल वाक्य)
– जैसे ही तुम गए, वैसे ही वह आ गया। (मिश्र वाक्य)

(ग) हर्षित गणित और कंप्यूटर दोनों में रुचि रखता है। (सरल वाक्य)
– हर्षित गणित में रुचि रखता है और कंप्यूटर में भी। (संयुक्त वाक्य)
– जैसे हर्षित गणित में रुचि रखता है वैसे ही कंप्यूटर में भी। (मिश्र वाक्य)

(घ) जैसे ही बस आई बच्चों ने शोर मचाया। (मिश्र वाक्य)
– बस आने पर बच्चों ने शोर मचाया। (सरल वाक्य)
– बस आई और बच्चों ने शोर मचाया। (संयुक्त वाक्य)

(ङ) उस अनपढ़ के लिए काला अक्षर भैंस बराबर है। (सरल वाक्य)
– वह अनपढ़ है और उसके लिए काला अक्षर भैंस बराबर है। (संयुक्त वाक्य)
– क्योंकि वह अनपढ़ है इसलिए उसके लिए काला अक्षर भैंस बराबर है। (मिश्र वाक्य)

बहुविकल्पी प्रश्न

1 (ख) **2** (क) **3** (क) **4** (ग)

रचनात्मक गतिविधि

मैं कल अपने माता-पिता के साथ पिकनिक पर गया। माँ मिठाइयाँ लाई थी और पिता जी खेल-सामग्री। माँ जो मिठाई लाई थी वह बहुत स्वादिष्ट थी। हम खेलने लगे। माँ नहीं खेल रही थी। पिता जी बोले, "जाओ, गेंद उठाकर लाओ।" मैंने पूछा, "गेंद किधर गई है?" गेंद मिल गई। माँ ने मेरे लिए प्रार्थना की, "ईश्वर करे, आज तुम ही जीतो।" तभी मौसम खराब हो गया। शायद बारिश आने वाली थी। वाह! सच में रिमझिम बारिश होने लगी। बारिश हुई इसलिए गरमी से भी राहत मिली। तब हम लौट आए।

21. मुहावरे-लोकोक्तियाँ

1 (क) दाँतो तले उँगली दबा ली (ख) आस्तीन का साँप

(ग) तलवे चाटता (घ) कोल्हू के बैल (ङ) खून के आँसू रुला

2 (क) परीक्षा आने से पहले ही विद्यार्थी कमर कस लेते हैं।

(ख) दिन-रात एक करके सलिल ने घर खरीदने के लिए धन कमाया।

(ग) शत्रु-सेना की खबर लाने के लिए जासूस को फूँक-फूँककर कदम रखना पड़ा।

(घ) परीक्षा समाप्त होने के चार माह बाद माधुरी घर से निकली तो सभी बोलने लगे कि अब तो माधुरी ईद का चाँद हो गई है।

(ङ) कुशल का पहचान-पत्र नहीं मिल रहा था। उसने अपनी अलमारी छोड़कर बाकी सब जगह ढूँढ़ा। तब उसकी बहन ने उठाकर दिया और बोली, "भैया इसे ही तो कहते हैं चिराग तले अँधेरा।"

3 एक थैली के चट्टे-बट्टे होना – एक जैसे होना

ईंट का जवाब पत्थर से देना – और अधिक अच्छा जवाब देना

आँखों में पानी होना – शर्म होना (इज्ज़त होना)

अक्ल का दुश्मन – मूर्ख

नाकों चने चबाना – बहुत कठिन कार्य करना

बीड़ा उठाना – ज़िम्मेदारी लेना

4 अँगूठा दिखाना – मना करना

घाव हरे होना – दुख याद आना

दूर के ढोल सुहावने – अनजानी वस्तु आकर्षक लगना

अकड़ जाना – ज़िद पर अड़ जाना

अंगारों से खेलना – खतरा मोल लेना

मुँह में राम बगल में छुरी – छल-कपट वाला व्यवहार

दिमाग आसमान पर होना – बहुत घमंड होना

अंधों में काना राजा – साधारण लोगों में थोड़े गुणों वाला

5 हमारी हार-जीत हमारी सोच पर निर्भर करती है।

– दुगुना लाभ

– सिर्फ़ अपने काम से मतलब रखना

– स्वाभाविक दोष में अन्य दोष

– होनहार के लक्षण प्रारंभ से ही प्रकट होने लगते हैं

बहुविकल्पी प्रश्न

1 (ख) **2** (क) **3** (घ) **4** (ग)

रचनात्मक गतिविधि

कलेजे पर पत्थर रखना – धीरज रखना

वाक्य – बेटे की मृत्यु के बाद भी माता-पिता को कलेजे पर पत्थर रखना पड़ा।

गले का हार – प्रिय वस्तु

वाक्य – गली के बुरे लोग तो आजकल अजय के गले का हार हो रहे हैं।

नाक रगड़ना – दीनता से प्रार्थना करना

वाक्य – उसके बार-बार नाक रगड़ने पर मुझे उसे नौकरी देनी पड़ी।

बाल-बाल बचना – दुर्घटना होते-होते बचना

वाक्य – सड़क दुर्घटना में पीटर बाल-बाल बच गया।

मुँहतोड़ जवाब देना – पूरा-पूरा जवाब देना

वाक्य – आजकल के बच्चे मुँहतोड़ जवाब देना सीख गए हैं।

नाक में दम करना – परेशान करना

वाक्य – छोटे बच्चे ने रो-रोकर माँ की नाक में दम कर दिया।

गाल बजाना – बकवास करना

वाक्य – रोहित पूरे दिन कोई काम नहीं करता, बस बैठा हुआ गाल बजाता रहता है।

इकाई प्रश्न पत्र 2

1 श्रीमती साप्ताहिक पारिश्रमिक

2 महाशय गणेश उच्चारण यद्यपि

3 जिह्वा पंच स्वप्न षटादश पक्षी सप्त

4 पानी, नीर; पंकज, जलज; खग, विहग; मेघ, वारिद

5 अपकर्ष अपवित्र अंत निष्क्रिय

6 शस्त्र – हाथ में लेकर चलाया जाने वाला हथियार अंबर – आसमान
शास्त्र – धर्म, साहित्य इत्यादि से संबंधित ग्रंथ अंबार – ढेर सारा

7 अनजान दूधवाला लिखित बाअदब

8 शाश्वत कुशाग्रबुद्धि अनंत क्षम्य

9 नील कंठ हो जिसका अर्थात शिव (बहुव्रीहि)
चार भुजाओं का समाहार (द्विगु)
राजा का कुमार (तत्पुरुष)
पीत है जो अंबर (कर्मधारय)

10 उसे कोई पसंद नहीं करता, जो कटु वचन बोलता है।
जब हम आए आप सो रहे थे।
कविता दुकान पर गई और फल ले आई।

11 चालाकी दिखाना एकता में बल बुरी तरह हराना

12 हरि – भारत 2011 में क्रिकेट वर्ल्ड कप जीता था न!
मदन – हाँ, फाइनल श्रीलंका के साथ हुआ था।
हरि – क्या खेली थी भारत की टीम!
मदन – धोनी को वर्ल्ड के सफल कैप्टन की उपाधि मिली।
हरि – युवराज सिंह का प्रदर्शन काफ़ी अच्छा रहा।
मदन – हाँ, उसे 'मैन ऑफ द सीरीज' चुना गया।

रचना खंड

1. रचनात्मक अभिव्यक्ति

1 बच्चे स्वयं करें।

2 (क) 08/06/20××

शुक्रवार

रात आठ बजे

आज का दिन बहुत अच्छा बीता। आज मैं अपने मम्मी-पापा तथा भाई के साथ मसूरी की शानदार वादियों में घूमने गई। ऊँचे-ऊँचे हरे-भरे पहाड़ देखकर मन रोमांचित हो उठा। हमने वहाँ कैंपटी फॉल भी देखा। ऊँची-ऊँची पहाड़ियों से निकलकर कल-कल करके बहते हुए पानी को देखकर मन प्रफुल्लित हो उठा। जिस रास्ते से हमारी गाड़ी गुज़र रही थी वहाँ का नजारा बेहद खूबसूरत था। धीरे-धीरे वक्त गुज़रता गया तथा चारों तरफ़ अँधेरा छाने लगा। वापस चलने का वक्त आ गया। पर आँखों के सामने वह अद्‌भुत नजारा अभी भी छाया हुआ है। अब भूख लग रही है। चलो, बाकी डायरी फिर लिखेंगे।

(ख) और (ग) बच्चे स्वयं करें।

3 (क) सीवर में बच्चा गिरने की घटना पर रिपोर्ट – दिनांक 10/07/20××

हमारे घर के पास बहुत दिनों से एक सीवर खुला पड़ा था। आज सुबह एक बच्चा साइकिल चलाते समय उस सीवर में गिर गया। बच्चे को सीवर से बाहर निकालने के लिए काफ़ी कोशिश की गई। अंत में बच्चे को बाहर निकाल लिया गया। उसको काफ़ी चोटें आईं। म्युनिसिपलिटी की लापरवाही से बच्चा अपनी जान भी गँवा सकता था।

(ख) बच्चे स्वयं करें।

4 (क) श्रुति – मोहिनी, तन्वी की तबीयत कुछ ठीक नहीं लग रही।

मोहिनी – तुम ही पूछ लो ना!

(मोहिनी हँसते हुए पूछती है।) तन्वी तुम्हारी तबीयत कैसी है?

तन्वी – मोहिनी, इससे कह दो कि मेरी चिंता न करे। (गुस्से में)

श्रुति – मेरे छोटे से मज़ाक का इतना बुरा लग गया।

तन्वी – यह कैसा मज़ाक है जिसमें एक इनसान का मन दुखी हो।

मोहिनी – तुम दोनों फिर बहस में पड़ गईं, चलो-चलो जल्दी दोस्ती करो।

श्रुति – अच्छा, सॉरी! अब तो नाराज मत हो।

तन्वी – अच्छा, ठीक है, ठीक है!

मोहिनी – ये हुई न बात!

(ख) और (ग) बच्चे स्वयं करें।

5. इसे विद्‌यार्थी स्वयं करें

2. अपठित गद्यांश

(क) 1. गद्यांश का मुख्य विषय है – हँसी का हमारे जीवन पर प्रभाव।

2. कौतुहलवश ध्यान से देखने पर लेखक न जाना कि सब एक साथ, एक ही तरह से हँसने वाले लोग किसी हास्य क्लब के सदस्य हैं।

3. हँसी की ज़रूरत सुर्खियों में होने के कारण उस पर किताबें लिखी जा रही हैं, वर्कशॉप हो रहे हैं।

4. जीवन में खुशमिज़ाज अर्थात तनाव मुक्त लोग ज़्यादा सफल होते हैं।

5. जो कुछ भी इनसान पाने के लिए भागदौड़ करता है। हँसी उस दिशा में दवा का काम करती है।

(ख) बच्चे स्वयं करें।

(ग) 1. (क) 2. (ग) 3. (घ) 4. (क) 5. (घ)

3. अपठित काव्यांश

(क) 1. प्रस्तुत कवितांश में कहा गया है कि पढ़ना-लिखना बोझ नहीं है।

2. धरती यानि मिट्टी में हम बीज डालते हैं। इन्हीं बीजों में से अंकुर फूटते हैं और मिट्टी से बाहर निकलते हैं, फिर पौधे बनते हैं। यही पौधे धीरे-धीरे पेड़ का रूप ले लेते हैं और एक जंगल का निर्माण करते हैं।

3. धरती, अंबर, नदियाँ, झरने को अपना कहा गया है।

4. धरती – धरा, वसुंधरा अंबर – आकाश, गगन नदी – सरिता, तटिनी

5. प्रकृति का आपसी प्रेम

(ख) बच्चे स्वयं करें।

(ग) 1. (ख) 2. (क) 3. (ग) 4. (ग) 5. (ग)

4. अनुच्छेद लेखन

बहुमंज़िली इमारत में काम करते मज़दूर

(क) आज जब हम शहर के बीचों-बीच खड़े होते हैं, तो हमें चारों तरफ़ इमारतें ही इमारतें दिखाई देती हैं। इन्हीं इमारतों में हम बड़े-बड़े उद्योग, शासन और शिक्षण संस्थान भी चलाते हैं। वातानुकूलित कमरों में बैठकर हम काम करते हैं और अपने सपनों को साकार करने की कोशिश करते हैं। आपने और हमने कभी सोचा है कि इतनी ऊँची-ऊँची इमारतें बनाने वाला मज़दूर खुद एक पक्की छत के लिए तरसता रह जाता है। इन ऊँची-ऊँची मीनारों के नीचे उसके सपने दब कर रह जाते हैं। उसे दो वक्त की रोटी भी ठीक से नहीं मिलती। बहुमंज़िली इमारतों में काम करने वाले इन मज़दूरों का जीवन भी सुरक्षित

नहीं होता। ऊँची-ऊँची इमारतों पर काम करते समय गिरने का डर लगा रहता है। बच्चों को अच्छी शिक्षा देना तो उनके लिए दूभर है। शिक्षा के अभाव में उसका बच्चा भी एक मज़दूर बनकर रह जाता है। हमारी सरकार को चाहिए कि मज़दूरों के जीवन सुधार की योजना बनाए। उन्हें अच्छी आमदनी, पक्के घर और बच्चों को अच्छी शिक्षा मुहैया कराए।

वह फूल जब खिला

(ख) मेरे घर के आँगन में एक गमला रखा था। उसमें एक गुलाब का पौधा लगा था, उसमें एक डाल पर कली भी थी। हम रोज़ उस गमले में पानी देते और कली के फूल बनकर खिलने का इंतजार करते। हर सुबह उठकर हम देखते कि फूल खिला या नहीं। आखिरकार वो दिन आ ही गया जब फूल खिला। मेरी छोटी बहन खुशी के मारे उछलने-कूदने लगी। उस खिले हुए फूल को देखकर उसके चेहरे पर जो मुसकराहट थी वो आज तक नहीं भूलती। उस खिलते हुए फूल की खुशबू से पूरा वातावरण महक उठा। जब हमने उसे तोड़ना चाहा तो हमारे हाथों में काँटा चुभा, तभी हमने अपने हाथ रोक लिए। वह फूल काँटो के बीच खिल रहा था, सबको खुशबू दे रहा था। मुश्किलों में भी मुसकराकर जीने का संदेश दे रहा था। हमें भी फूल की तरह विपरीत परिस्थितियों का सामना करके लोगों के चेहरे पर मुसकराहट लानी चाहिए और उनके जीवन को महकाना चाहिए। फूल की तरह देने का भाव हमारे अंदर भी होना चाहिए।

नोट: आगे के अनुच्छेद छात्र स्वयं लिखने का अभ्यास करें।

5. निबंध लेखन

गाँवों में बढ़ती बेरोज़गारी

1 (क) एक विशेष क्षेत्र पर रहने वाले लोग खेती एवं अन्य परंपरागत पेशे से जुड़े हों, गाँव कहलाते हैं। भारत की अधिकतर जनसंख्या गाँवों में रहती है। भारत के गाँव प्रकृति से घिरे हुए हैं। यहाँ खेत-खलियान, कुएँ, तालाब, नदियाँ और पशु-पक्षियों का बसेरा देखने को मिलता है। घरों और खेतो में कामकाजी औरतें व्यस्त नजर आती हैं। गाँव में रोटी कमाने के पुराने साधन अभी भी मौजूद हैं। यहाँ घर-घर में कुटीर उद्योगों का चलन है। गाँव की औरतें अपने हाथों से अलग-अलग तरह के सामान तैयार करती हैं। उनके द्वारा सिलाई, बुनाई, मिट्टी के बर्तन आदि काम किए जाते हैं। इसी तरह के कामों से ग्रामीण अपना जीवन व्यतीत करते हैं।

गाँवों का धीरे-धीरे नगरीकरण होता जा रहा है। किसानों को उनकी ज़मीन के मुँहमाँगे दाम मिल रहे हैं। किसान धीरे-धीरे भूमिहीन होता जा रहा है। बढ़ती जनसंख्या की वजह से गाँव अब शहरों में तब्दील होते जा रहे हैं। उद्योगों के विकास तथा शहरीकरण की इस प्रक्रिया ने भी गाँवों में बेरोज़गारी को बढ़ावा दिया है। मनुष्यों का स्थान मशीनों ने ले लिया है। ग्रामीण युवकों की बदलती

मानसिकता ने उन्हें ग्रामीण जीवन के प्रति उदासीन कर दिया है। फ़ैशन और शहरी जीवन की चकाचौंध ने उन्हें शहरों की ओर आने के लिए प्रेरित किया है तथा खेती-बाड़ी से संबंधित कार्यों के प्रति उदासीन कर दिया है। बेरोज़गारी का कारण दोषपूर्ण शिक्षा प्रणाली भी है। पढ़े-लिखे लोग रोजी-रोटी की तलाश में बेरोज़गार घूम रहे हैं।

गाँवों में बेरोज़गारी नियंत्रण के लिए सरकार को महत्त्वपूर्ण कदम उठाने होंगे। इसके लिए सरकार तथा बैंक उन्हें आर्थिक सहायता देकर उनकी मदद करें। ग्रामीण युवकों के लिए कृषि आधारित उद्योग धंधों का विकास किया जाए। उन्हें कृषि व्यवसाय में प्रशिक्षित किया जाए तथा नई तकनीकों का ज्ञान कराया जाए। गाँवों में रोज़गार उपलब्ध कराने के लिए सरकार को आसान किस्तों पर ऋण उपलब्ध कराना चाहिए। लघु एवं कुटीर उद्योगों का विकास करना चाहिए। बेरोज़गार युवक-युवतियों को प्रशिक्षण देकर उनके लिए रोज़गार की सुविधाएँ जुटानी चाहिए। बाज़ार की उपलब्धता करानी चाहिए जिससे किसान अपनी फ़सल को उचित दामों पर बेच सकें। रियायती दरों पर खाद, बीज तथा अन्य सुविधाएँ मुहैया करानी चाहिए। ग्रामीण बेरोज़गारी को दूर करने के लिए चौतरफ़ा प्रयास करने होंगे तभी इस गंभीर समस्या से छुटकारा मिल सकता है।

(ख) तथा (ग) बच्चे स्वयं करें।

2. संकेत बिंदुओं की सहायता से निबंध लिखने का अभ्यास करें–

(क) **संकेत बिंदु –** प्लास्टिक का प्रयोग – हानियाँ – पर्यावरण के लिए नुकसानदायक – जागरूकता फैलाना – प्लास्टिक की थैलियों पर प्रतिबंध लगाना – उपसंहार

(ख) **संकेत बिंदु –** घर से निकलना – सरदी में मूँगफली बेचता लड़का मिलना – उसके द्वारा अपनी मजबूरी बताना – उसकी मदद करना – उसका स्कूल में दाखिला कराना

(ग) **संकेत बिंदु –** कुत्ते, सांड आदि पशुओं का सड़कों पर घूमना – दुर्घटना का भय बने रहना – लोगों का उनके लिए खुले में खाना डालना – कूड़ा-करकट होना – नगर-निगम की लापरवाही

(घ) **संकेत बिंदु –** मेरा स्वप्न – पंछी बनकर उड़ना – आसमान से बातें करना – मनचाहे फल खाना – चहकना – चिंता से मुक्ति

(ङ) **संकेत बिंदु –** भूमिका – एक फैक्टरी में मेरा जन्म – दुकान पर बेचना – किसी बच्चे का खरीदना – बच्चों का खेलना तथा खुश होना – सिलाई टूटना तथा फट जाना

(च) **संकेत बिंदु –** नेता की समाज में भूमिका – उसकी खूबियाँ – क्यों प्रिय है – उसकी योग्यता – उसके व्यवहार आदि का वर्णन

(छ) **संकेत बिंदु –** सुबह से चहल-पहल – विद्यालय पहुँचना तथा तैयारी करना – मुख्य अतिथि का स्वागत – भाषण – रंगारंग कार्यक्रम – समारोह का समापन

(ज) **संकेत बिंदु –** अचानक तेज़ बारिश होना – लगातार पानी बरसना – बाढ़ के कारण चारों तरफ़ लोगों की चीख-पुकार – जान-माल की हानि – लोगों का मदद करना

(झ) **संकेत बिंदु –** आसमान में लालिमा छाना – चिड़ियों का चहकना – धीरे-धीरे सूरज का निकलना – अंधकार दूर भागना – लोगों का जागना – अपने नित्य कर्मों में लगना

(ञ) **संकेत बिंदु –** छुट्टी के दिन – मम्मी-पापा के साथ फ़िल्म देखने जाना – डरावने दृश्य देखकर सहम जाना – फिर सहज होना – फ़िल्म के दृश्य अंतर्मन पर छाना

6. पत्र लेखन

1. प्रधानाचार्य महोदय,

दिल्ली पब्लिक स्कूल

मयूर विहार फेस-I

दिनांक: 25 नवंबर 20××

विषय: छात्रवृत्ति हेतु प्रार्थना-पत्र।

माननीय महोदय,

सविनय निवेदन यह है कि मैं आपके विद्यालय में कक्षा सातवीं 'बी' की छात्रा हूँ। मेरे पिता जी की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं है। वे विद्यालय के शुल्क तथा अन्य व्ययों का भार उठा पाने में असमर्थ हैं। मैं अपनी पिछली कक्षाओं में प्रथम स्थान प्राप्त करती रही हूँ तथा खेलकूद व अन्य प्रतियोगिताओं में भी मैंने अनेक पद प्राप्त किए हैं।

कृपया मुझे विद्यालय द्वारा छात्रवृत्ति प्रदान करने का कष्ट करें ताकि मैं अपनी पढ़ाई जारी रख सकूँ। मैं सदैव आपकी आभारी रहूँगी।

आपकी आज्ञाकारी शिष्या

मुक्ति

सातवीं 'बी'

2. चौधरी पब्लिक स्कूल

बरकत नगर, जयपुर (राजस्थान)

कमरा नं॰ 10

दिनांक: 25 फरवरी 20××

प्रिय मित्र रघुवंश

नमस्कार! मैं यहाँ सकुशल हूँ और सदैव तुम्हारी कुशलता की कामना करता हूँ। बहुत दिनों से तुम्हारा पत्र नहीं मिला। मित्र, तुम्हारा स्वास्थ्य कैसा है? और तुम्हारी पढ़ाई-लिखाई कैसी चल रही है? इस बारे में सूचित करते हुए पत्र अवश्य लिखना। अब पत्र समाप्त करता हूँ।

तुम्हारा मित्र

स्नेहिल

नोट: आगे के पत्र छात्र स्वयं लिखने का प्रयास करें।

7. चित्र-वर्णन

1. यह जो चित्र आप देख रहे हैं राजपथ रोड़ का है। रोड़ पर सेना की दो जीप खड़ी हैं जो फूलों से सजी हुई हैं। उनके पीछे का हिस्सा खुला है। गाड़ी में कुछ बच्चे बैठे हैं तथा कुछ खड़े हैं। बच्चे ताली बजा रहे हैं तथा हाथ खोलकर अभिवादन स्वीकार करने की मुद्रा में दिखाई दे रहे हैं। सभी बच्चे प्रसन्न लग रहे हैं। सभी बच्चों ने सफ़ेद पेंट, कमीज़ और रंगीन कोट डाला हुआ है। इनके गले में माला और वीरता पदक हैं। साफ़ दिखाई देता है कि ये बच्चे वीरता पुरस्कार से सम्मानित किए गए हैं। जीप के पिछले पहिये पर 'राष्ट्रीय वीरता पुरस्कार' का बोर्ड लगा है। वाहन चालक की सीट पर सेना का जवान बैठा है।
2. यह चित्र गाँव के हरे-भरे मैदान का है। मैदान में पीछे की तरफ़ बहुत सारे पेड़ लगे हुए हैं। मैदान के बीचों-बीच कुछ बच्चे कतार में पद्मासन कर रहे हैं। विद्यार्थियों को सफ़ेद पट्टियों के बीच में बैठाया गया है। कुछ बच्चे सफ़ेद कमीज में तो कुछ रंगीन कमीज़ में हैं। उनकी योग की कक्षा लगी है। बहुत ही खूबसूरत दृश्य है।

   बाकी चित्रों का वर्णन छात्र स्वयं करें।

8. कहानी लेखन

दो मित्र

1. एक बार एक गीदड़ और ऊँट में मित्रता हो गई। दोनों की मित्रता काफ़ी गहरी होती चली गई। एक दिन दोनों को बहुत तेज़ भूख लगी। गीदड़ ने ऊँट से कहा, "मित्र, नदी के उस पार खरबूज़े के खेत हैं। क्यों न हम दोनों वहाँ खरबूज़े खाने चलें।" ऊँट ने गीदड़ की बात मान ली।

   रास्ते में एक नदी पड़ती थी। ऊँट ने गीदड़ को अपनी पीठ पर बैठाकर नदी पार की और खेत में पहुँचकर छककर खरबूज़े खाए। गीदड़ का पेट जल्दी भर गया लेकिन ऊँट भर पेट खाने में लगा था। गीदड़ ने खुशी के मारे हुआँ-हुआँ की आवाज़ें निकालनी

शुरू कर दीं। गीदड़ की हुआँ-हुआँ सुनकर किसान डंडा लेकर आ गया। लेकिन ऊँट खरबूज़े खाने में मग्न था। किसान ने ऊँट की जमकर पिटाई की।

नदी पर गीदड़ ऊँट की प्रतीक्षा कर रहा था। और उसे समझाते हुए बोला, "मित्र! अब पछताने से क्या होगा! चलो नदी पार कर लें।" और झट से ऊँट की पीठ पर बैठ गया। नदी के बीचों-बीच जाकर ऊँट ने गीदड़ को सबक सिखाने की ठानी और पानी में डुबकी लगा दी। गीदड़ को अपनी गलती समझने में देर न लगी। जैसे को तैसा मिल गया था।

2 और 3 विद्यार्थी स्वयं करें।

अभ्यास प्रश्न पत्र

1 वे व्यंजन जो दो व्यंजनों के योग से कुछ इस तरह बन गए हैं कि उनका रूप लेखन तथा उच्चारण दोनों में ही बदल गया है, संयुक्त व्यंजन कहलाते हैं। क्ष, त्र, ज्ञ तथा श्र संयुक्त व्यंजन हैं।

जब दो अलग-अलग व्यंजन मिलें तो उस मिले हुए रूप को संयुक्ताक्षर कहते हैं – भक्त, प्रार्थना, शक्ति इत्यादि।

2 वर्ग के अंतिम अथवा पाँचवें वर्ण को पंचम वर्ण कहते हैं। किसी वर्ग के व्यंजन के पूर्व उसी वर्ग का पंचम वर्ण आने पर पंचम (वर्ण) अनुस्वार (बिंदु) के रूप में अपने पूर्व वर्ण के ऊपर लग जाता है; जैसे – गङ्गा = गंगा – ङ् (क वर्ग का पंचम वर्ण) वर्ग के ही तीसरे वर्ण 'ग' के पूर्व आया है, अत: ङ् (पंचम वर्ण) अपने वर्ण के ऊपर बिंदु के रूप में लग गया। इसी प्रकार चञ्चल = चंचल, मन्दिर = मंदिर, पङ्कज = पंकज आदि

3 **रूढ़ शब्द** – जो शब्द किसी एक अर्थ या वस्तु के लिए रूढ़ हो जाते हैं, वे रूढ़ शब्द कहलाते हैं। जैसे – जल, नल, हल, फल इत्यादि।

यौगिक शब्द – ये वे शब्द होते हैं जो दो या दो से अधिक मूल शब्दों के योग से बनते हैं। जैसे – बैलगाड़ी, रेलमंत्री, क्रीड़ास्थल इत्यादि।

योगरूढ़ शब्द – जो यौगिक शब्द किसी एक चीज़ या व्यक्ति के लिए रूढ़ हो जाते हैं, योगरूढ़ शब्द कहलाते हैं। जैसे – दशानन, नीलकंठ, चतुर्भुज इत्यादि।

4 **द्रव्यवाचक संज्ञा** – ऐसी जातिवाचक संज्ञाएँ जो पदार्थ (ठोस या तरल) के रूप में होती हैं और जिन्हें नापा या तोला जा सकता है, द्रव्यवाचक संज्ञाएँ कहलाती हैं; जैसे– सोना, चाँदी, लोहा, पीतल, मिट्टी इत्यादि।

समुदायवाचक संज्ञा – किसी समूह का बोध कराने वाले संज्ञा शब्द समुदायवाचक संज्ञा कहलाते हैं; जैसे – सेना, कक्षा, भीड़ आदि।

5 सम्राज्ञी विदुषी कवयित्री

6 (क) अधिकरण (ख) कर्म (ग) कर्ता

7 जब सर्वनाम संज्ञा से पहले लगकर संज्ञा की विशेषता बताते हैं तो वे सार्वनामिक विशेषण बन जाते हैं।

8 विशेषण संख्यावाचक है या परिमाणवाचक, इसका निर्णय संज्ञा के आधार पर होता है। यदि संज्ञा गिनने योग्य है, तो संख्यावाचक विशेषण होगा और यदि संज्ञा नापने-तोलने योग्य है, तो विशेषण परिमाणवाचक होगा। जैसे – कुछ लोग उधर चले गए हैं। (संख्यावाचक) कुछ चीनी बिखर गई है। (परिमाणवाचक)

9 चल पढ़ चढ़

10 भूतकाल के छह भेद हैं– सामान्य भूतकाल, आसन्न भूतकाल, पूर्ण भूतकाल, अपूर्ण भूतकाल, संदिग्ध भूतकाल, हेतुहेतुमद् भूतकाल।

11 जो शब्द दो शब्दों, शब्द समूहों, वाक्यों या उपवाक्यों को जोड़कर या अलग कर एक समूचा रूप प्रदान करे, वह समुच्चयबोधक कहलाता है। इसे योजक भी कहा जाता है; जैसे– सचिन और रोहित में गहरी मित्रता है।

जो शब्द संबंध कारक चिह्न के साथ प्रयुक्त होकर, वाक्य के संज्ञा-सर्वनाम का संबंध दूसरे शब्दों से बताए, वह संबंधबोधक कहलाता है; जैसे– राजू घर के बाहर खड़ा है।

12 पूर्णविराम – मैं घर जा रहा हूँ।

अल्पविराम – चोरी करना, झूठ बोलना, अपशब्द बोलना ये सभी गलत बातें हैं।

कोष्ठक – राम (दशरथ पुत्र) ने रावण को मारा।

लाघव चिह्न – डॉ॰ भल्ला बहुत अच्छे इनसान हैं।

13 (क) स्वर्ण हस्त ध्वज

(ख) उपयोगी – अनुपयोगी; जन्म – मृत्यु; आदि – अंत

(ग) अवधि – काल, समय अंबर – आकाश, वस्त्र

अवधी – अवध की भाषा अंबार – ढेर

14 निः + काम; अति + अधिक; अति + अंत

15 (क) द्विगु; तत्पुरुष; कर्मधारय

(ख) अस्वाभाविक – अ स्वभाव इक

बेशर्मी – बे शर्म ई

(ग) कर्तृवाच्य कर्तृवाच्य

16 (क) मेरी माता जी घर पर नहीं हैं।

(ख) उसे भैंस का गरम दूध चाहिए।

17 आज्ञावाचक विधानवाचक

18 मुझे पढ़ना अच्छा लगता है इसलिए मैं पढ़ना चाहती हूँ।

श्वेता और मैं साथ नहीं रहते इसलिए अलग-अलग घरों में रहते हैं।

19 रवि को शतरंज खेलना तो आता नहीं है, हार गया तो अब दूसरों को दोष दे रहा है। यह तो वही बात हुई नाच न जाने आँगन टेढ़ा।

आजकल पुराने नौकर पर भी विश्वास नहीं करना चाहिए क्योंकि सुना तो होगा घर का भेदी लंका ढाए।

20 (क) रीढ़ सीधी रखने से तात्पर्य निडर, आत्मविश्वासी और मेहनती लोगों से है।

(ख) जिह्वा पर अंतर का अंगार रखने का अर्थ है कथनी और करनी समान होना।

(ग) भविष्य में आने वाली कठिनाइयों का सामना करना तथा विजय प्राप्त करना।

(घ) रोशनी, पास

(ङ) आतंक मचाने वाला, तलवार

21 (क) यहाँ पर 'जलियाँवाला बाग हत्याकाँड' की घटना का वर्णन किया गया है।

(ख) जनरल डायर का हुक्म था कि आठ बजे के बाद कोई घर से बाहर नहीं निकलेगा।

(ग) लगभग एक हज़ार लोग रातभर ज़ख्मी पड़े रहे।

(घ) जनरल डायर संतुष्ट नहीं था क्योंकि वह देखना चाहता था कि उसके आदेश का पालन हुआ या नहीं।

(ङ) आदेश, सैनिक